23/02/2026

Dr. Arun Kumar Ray
Assistant Professor
Deptt of Psychology
U.R. College Rosera Samastipur
Paper-(MJC) 2025-2029
Semester-Ist-2025-2029

* * * *

TOPIC:- Personality

SUB-TOPIC

* (I) व्यक्तित्व का अर्थ एवं स्वरूप (Meaning and Nature of Personality)

* 'Personality' शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'पर्सोना' (Persona) से बना है जिसका अर्थ होता है - मुखौटा (Mask) अथवा वेशभूषा इस शाब्दिक अर्थ को देखते हुए साधारणत: व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य रूप रंग तथा शारीरिक गठन आदि से लगाया जाता है, किन्तु यह व्यक्तित्व का एक पहलू है मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व व्यक्ति के बाह्य एवं आन्तरिक दोनों गुणों का संगठित या समन्वित रूप है आलपोर्ट

* (Allport, 1961) के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक शीलगुणों का गत्यात्मक संगठन है जो उसके विशिष्ट व्यवहार एवं विचार को निर्धारित करते हैं" आइजेंक (Eysenck) के शब्दों में, व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्तप्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।" साथ ही साथ इसमे तीन व्यक्तित्व के स्वरूप के बारे में स्पष्ट होती है।

*(I) मनोदैहिक शीलगुण (Psychophysical system)
*(II) गत्यात्मकता तथा संगतता (Dynamism and consistency)
*(III) अपूर्व अभियोजन (Unique Adjustment)

Dr. Arun Kumar Ray

P.T.O

Personality

2

* (I) मनोदैहिक शीलगुण (Psychophysical system)

व्यक्तित्व मनो-शारीरिक गुणों का संगठन है, इसमें केवल शारीरिक गुण ही नहीं मानसिक गुण भी सम्मिलित हैं, व्यक्ति की शारीरिक प्रक्रियाएँ उसके मानसिक गुणों को आधार प्रदान करती हैं इस प्रकार इन दोनों तत्वों के परस्पर अन्तःक्रिया से व्यक्तित्व का निर्माण होता है यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के शीलगुणों का योगफल नहीं, बल्कि एक विशेष संगठन है, इसी कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के शीलगुणों में समानता होते हुए भी उनके विशिष्ट संगठन के कारण प्रत्येक व्यक्ति का विचार, व्यवहार या अभियोजन विशिष्ट व भिन्न हो जाता है,

* (II) गत्यात्मकता तथा संगतता (Dynamism and consistency)

व्यक्तित्व संगठन में एक और गत्यात्मकता, तथा दूसरी और स्थिरता की विशेषता परिलक्षित होती है, गत्यात्मकता का तात्पर्य है कि मनोदैहिक शीलगुणों का यह संगठन स्थिर (static) नहीं है बल्कि गतिशील है परिवर्तनशील वातावरण में व्यक्तित्व संगठन में भी परिवर्तन हो सकता है, वातावरण से अभियोजन (Adjustment) स्थापित करने के प्रयत्न में व्यक्ति के जन्मजात व अर्जित गुणों का परिमार्जन और परिवर्द्धन होता रहता है।

* (III) अपूर्व अभियोजन (Unique Adjustment):—

प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुसार परिस्थितियों के साथ समायोजन करने का प्रयत्न करता है चूँकि मनोदैहिक शीलगुणों के विशिष्ट संगठन के कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की मनोशारीरिक अवस्थाएँ एक समान नहीं होती तथा उनके गत्यात्मक संगठन में भी भिन्नता पायी जाती है

Dr. Arun Kumar Ray

The end.